BA-3, Paper-5th
Topic - लोकनिगम,
Date - 21.07.2020
Seema kumari, Asst. Prof. (Pol. sc.), RMC, VKSU.

सार्वजनिक (लोक) निगम के गठन के कारणों में, एक महत्वपूर्ण कारण है:- औद्योगीकरण के कारण - आधुनिक युग में औद्योगीकरण और शहरीकरण तेजी से हो रहा है। ऐसी स्थिति में उद्योग और व्यवसाय पर नियंत्रण रखना सरकार के लिए आवश्यक हो गया है। इसका उद्देश्य लोगों को उचित मूल्य पर बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराना होता है। ऐसे व्यवसायिक और औद्योगिक गतिविधियों के लिए सार्वजनिक निगमों का गठन किया गया है। उद्योगों के विकास और सरकारी उद्योगों को चलाने के लिए औद्योगिक वित निगम या औद्योगिक विकास निगम जैसे सार्वजनिक निगमों की स्थापना की गई है। विभिन्न राज्यों में परिवहन को सुचारु करने के लिए परिवहन निगम बनाया गया है। मेट्रो रेल सेवा के कुशल संचालन के लिए DMRC, LMRC दिल्ली, लखनऊ में बनाया गया।

लोक निगम तथा विभागीय प्रशासन में अंतर :-

लोक निगम तथा सरकारी विभाग सरकारी उपक्रम के ही दो रूप है। प्रक्रिया, संसद तथा कार्यपालिका के साथ उनके संबंधों की दृष्टि से उनमें पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है जो निम्न है:-

1. कानूनी स्वायतता संबंधी - लोक निगमों को आंतरिक मामलों में स्वायतता प्राप्त होती है किंतु विभागों को इस की स्वायतता प्राप्त नहीं होती है।
2. संसदीय नियंत्रण की दृष्टि से - लोक निगमों पर संसदीय नियंत्रण कम होता है।
3. उतरदायित्व की दृष्टि से - निगमों के संबंध में व्यवस्थापिका द्वारा प्रश्नों का उतर दिए जाने का दायित्व कम होता है।
4. वितीय दृष्टि से - लोक निगमों के सम्बंध में ~~व्यवस्थापिका द्वारा प्रश्नों का उतर~~ संसद से प्राप्त होने वाली आर्थिक सहायता के अतिरिक्त अपनी आर्थिक स्थिति एवं योजनाओं

Scanned with CamScanner

के लिए धन जुटाने के लिए उधार लेने तथा दोनों स्वयं बजट तैयार करने के लिए निगम स्वतंत्र होते हैं। विभागों को यह स्वतंत्रता नहीं प्राप्त होती है।

5. कार्मिक वर्ग के प्रशासन की दृष्टि से - कर्मचारी (विभागीय) नागरिक सेवाओं के सदस्य होते हैं। निगम में सेवा शर्तें निजी उद्योगों जैसी होती है।

6. लेखा परीक्षण की दृष्टि से - विभागों में सरकारी ऑडिट करते समय वैधानिकता एवं ईमानदारी के साथ किया जाता है। निगमों के वार्षिक हिसाब किताब की परीक्षा व्यापारिक उद्योगों की भांति की जाती है।

7. विभागों पर मुकदमा नहीं ~~किया~~ चलाया जा सकता है। निगमों पर कानूनी कार्यवाई की जाती है।

8. सरकारी निगम अपने कार्य की प्रगति एवं संगठन के कारण राजनीतिक दबाव से प्रभावित नहीं होते हैं।

<u>लोक निगमों की सीमाएं :-</u>

सरकार की व्यवसायिक गतिविधियों को चलाने के लिए ~~सार्वजनिक~~ लोक निगम सर्वोत्तम एजेंसी है क्योंकि इनके पास वित्तीय, कार्मिक और प्रबंधकीय आजादी होती है। व्यवसायिक लचीलापन और कुशलता होती है तथा वह प्रत्यक्ष राजनीतिक नियंत्रण और हस्तक्षेप से मुक्त होते हैं। लेकिन साथ ही सरकार के नीति निर्देशन और कानून द्वारा उन पर कुछ सीमाएं भी आरोपित की जाती है जो निम्न हैं:-

1. सामान्य नीति क्या हो? संगठन के संचालन के लिए? जिससे दैनिक कार्य में भी सरकारी हस्तक्षेप बढ़ जाता है।
2. स्वायतता और दायित्वों के बीच संतुलन कैसे रखा जाए?
3. लोक निगम व्यवसाय, बैंकिंग, परिवहन, ऋण और वित्तीय व्यवस्था जैसे मामलों के लिए उपयोगी है। रक्षा, कानून और व्यवस्था, न्याय जैसे सरकारी कामों के लिए उपयोगी नहीं है। इनके लिए विभागीय व्यवस्था ही कारगर है।
4. सार्वजनिक निगमों को प्रोत्साहन देने और हतोत्साहित करने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं है इसलिए प्रबंधकों को सही ढंग से प्रेरणा नहीं मिल पाती है।

लोक निगमों को वही कार्य सौंपे जाते हैं जिनके लिए व्यवसायिक दक्षता, वाणिज्यिक कार्यकुशलता और राजनीतिक हस्तक्षेप की छूट की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner